

USTAD GHULAM MUSTAFA KHAN

Ustad Ghulam Mustafa Khan is a traditional Hindustani Classical Vocalist belonging to the illustrious Rampur Sahaswan Gharana which owes the allegiance to SENIYA tradition. He has been performing from the age of 8 years and his performance career is more than 75 years.

2. Born on March 3, 1931, Ustad Mustafa Khan is amongst the few artists to have performed at the Rashtrapati Bhavan at a conference held by former Honorable President of India, Dr. Rajendra Prasad in 1952 with great maestros of that time merely at the age of 21. He was declared Junior Tansen in 1969 by Haridas Sangeet Sabha, Mangalore. He played the role of Baiju Bawra in a German Documentary Rain Maker shot in Jaipur. He has given his voice to more than 70 documentary films made by Films Division; many of them are recipients of International & National Awards.

3. Ustad Mustafa Khan has performed at various places all over the world. He performed at Baltimore University and was conferred an Honorary Citizenship of Baltimore City. The Governor of Maryland presented him with Honorary Citizenship for outstanding contribution to the field of Indian Classical Music in1986. He performed at Golden Jubilee in the presence of the Honorable Queen of United Kingdom. He has also performed at Festival de Lille in the presence of Lady Diana in France. He collaborated on a project of ancient Indian Music Jati Gayan with Acharya K.C. Brahaspati, besides doing research work with him. He sang compositions derived from Natyashastra and Brihat Deshi written by Matang Rishi and from sharing Dev's Sangeet Ratnakar Based on Jati Gaan. Seven of his Ancient Indian music records of 30 minutes each were preserved in the Central Sangeet Natak Academy, New Delhi, making him the youngest artist to be preserved.

4. Ustad Mustafa Khan has travelled all over the globe to perform in the biggest of Classical Music Festivals. He has always believed in giving back to the society, be it identifying and nurturing some of the best musicians in India or mesmerizing the nation through music. With this belief he is proud to be the Guru of the likes of Asha Bhosale, Manna Dey, Geeta Dutt Roy, A.R. Rahman, Hariharan, Waheeda Rahman, Shaan, Sonu Nigam, Sagarika, Kamal Barot, Ranu Mukherjee, Alisha Chinoy and sons Murtuza Mustafa, Qadir Mustafa, Rabbani Mustafa, Hasan Mustafa all of these have achieved great heights and are nationally and internationally popular for their contribution.

5. Ustad Mustafa Khan has received various awards and honours including Padma Shri (1991), Sangeet Natak Akademi Award (2003), Padma Bhushan (2006), 'National Tansen Samman (2008), Pandit Dinanath Mangeshkar Award (2011),"Uttam Vag- Geykar Jialal Vasant Award" (2014), Yash Bharti Award (2016), Ustad Haafiz Ali Khan award (2003), Pandit Basavaraj `Rajguru National Memorial Trust award (2016), Honorary Citizenship for outstanding contribution to the field of Indian Classical Music (1986), Maharashtra Sanskrutik Puraskar, Tagore Ratna Award instituted by Central Sangeet Natak Academy in 2011 etc.



उस्ताद गुलाम मुस्तफा खां

उस्ताद गुलाम मुस्तफा खां एक पारंपरिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक हैं और प्रतिष्ठित रामपुर सहसवां घराना, जो 'सेनिया' परंपरा के प्रति निष्ठा से ओत-प्रोत हैं, के सदस्य हैं। आप 8 वर्ष की उम्र से इस विधा में अपनी प्रस्तुतियां दे रहे हैं तथा इस क्षेत्र में आपका प्रदर्शन करिअॅर 75 वर्षों से भी अधिक लम्बा है।

2. आपका जन्म 03 मार्च, 1931 को हुआ था। आप उन गिने-चुने कलाकारों में से हैं, जिन्होंने महज 21 वर्ष की उम्र में, उस समय के महान कलाकारों के साथ वर्ष 1952 में भारत के पूर्व माननीय राष्ट्रपति, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक सम्मेलन में अपनी प्रस्तुति दी थी। आपको वर्ष 1969 में हरिदास संगीत सभा, मंगलौर द्वारा जूनियर तानसेन घोषित किया गया था। आपने जयपुर में एक जर्मन डाक्यूमेंट्री रेन मेकर शॉट में बैजू बावरा की भूमिका अदा की थी। आपने फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित 70 से भी अधिक डाक्यूमेंट्री फिल्मों में अपनी आवाज दी है; इनमें से कई एक फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए।

3. आपने विश्व भर में कई एक स्थानों पर अपनी प्रस्तुतियां दी हैं। आपने बाल्टीमोर विश्वविद्यालय में अपनी प्रस्तुति दी थी और आपको बाल्टीमोर शहर की मानद नागरिकता से नवाजा गया था। मैरीलैंड के गवर्नर ने 1986 में भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान करने के लिए आपको मानद नागरिकता से सम्मानित किया था। आपने यूनाइटेड किंगडम की माननीया महारानी की उपस्थिति में स्वर्ण जयंतीके अवसरपर अपनी प्रस्तुति दी थी। आपने फ्रांस में लेडी डायना की उपस्थिति में फेस्टिवल-डी-लिली में भी अपनी प्रस्तुति दी थी। आपने आचार्य के.सी. वृहस्पति के साथ शोध कार्य करने के अतिरिक्त उनके ही साहचर्य में प्राचीन भारतीय संगीत जटी गान के एक प्रोजेक्ट में अपना सहयोग प्रदान किया। आपने मतंग ऋषि द्वारा लिखित नाट्य शास्त्र तथा वृहत् देशी तथा जटी-गान पर आधारित देव के संगीत रत्नाकर की साझेदारी से उत्पन्न रचनाओं का गायन प्रस्तुत किया। आपके, प्रत्येक 30 मिनट के प्राचीन भारतीय संगीत रिकार्डों में से सात रिकार्ड केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली में संरक्षित किए थे और आप संरक्षित कृतियों की श्रेणी में सबसे युवा कलाकार बन गए।

4. आपने विशालतम शास्त्रीय संगीत महोत्सवों में अपनी प्रस्तुतियां देने के लिए पूरे विश्व की यात्रा की है। आपने हमेशा ही समाज को कुछ न कुछ प्रतिदान करने पर विश्वास दिखाया है, चाहे वह भारत में कुछ सर्वोत्कृष्ट संगीतज्ञों की पहचान करने और उन्हें तराशने का हो या फिर संगीत के द्वारा राष्ट्र को सम्मोहित करने का हो। इसी एहसास के साथ आपको आशा भोंसले, मन्ना डे, गीता दत्त रॉय, ए.आर. रहमान, हरिहरन,वहीदा रहमान, शान, सोनू निगम, सागरिका, कमल बारोट, रानू मुखर्जी, अलीशा चिनॉय और सन्स-मुर्तजा मुस्तफा, कादिर मुस्तफा, रब्बानी मुस्तफा, हसन मुस्तफा जैसे फनकारों के गुरू होने का गौरव प्राप्त है और आज इन सभी ने आसमान की ऊंचाई को छुआ है तथा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जगत में अपने योगदान के लिए जाने जाते हैं।

5. आपको पद्मश्री (1991), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2003), पद्म भूषण (2006), राष्ट्रीय तानसेन सम्मान (2008), पंडित दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार (2011),"उत्तम वाग-गेयकर जयलाल वसंत पुरस्कार" (2014), यश भारती पुरस्कार (2016), उस्ताद हाफिजअली खान पुरस्कार (2003), पंडित बासव राज 'राजगुरू नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट पुरस्कार (2016), भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए मानद नागरिकता (1986), महाराष्ट्र सांस्कृतिक पुरस्कार, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा 2011 में संस्थापित टैगोर रत्न पुरस्कार आदि सहित विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ा गया है।